बिहार में पंचायतों को आवंटित राशि का समुचित प्रबंधन की चुनौती

डॉ॰ शत्रुघ्न कुमार

भारत गाँवों का देश है इसकी संस्कृति गाँवों में बसती है। भारत की आबादी के 70ः जनसंख्या गाँवों में ही गुजर–बसर करती हैं। भारत में बदलाव का रास्ता अनिवार्य तौर पर 'गाँवों के बदलाव' से होकर ही गुजरता है। इसे अनेक विद्वानों ने बखूबी समझा और इसे पूरी तरह ग्रामीण भारत पर ही केंद्रित रखा है, जिसमें सैधांतिक तौर पर सचमुच भारत को बदलने की क्षमता है। लेकिन हमेशा की भाँति ही इनके समक्ष क्रियान्वयन की चुनौती बरकरार है।

बिहार के परिपेक्ष्य में लगभग 80ः लोग गाँवों में अधिवास करते हैं। गाँवों के चहुँमुखी विकास हेतु पंचायती राज एक सशक्त हथियार है। पंचायती राज का उद्देश्य प्रशासन में जनता की भागीदारी अथवा स्वशासन है परन्तु शिक्षा की कमी, जानकारी अथवा जागरूकता के अभाव के कारण यह स्वशासन स्थापित नहीं हो पा रहा है। कमोवेश सरकार के ग्राम पंचायत कर्मचारीगण–पंचायत सचिव, ग्राम सेवक, ग्राम विकास अधिकारी ही शासन कर रहे हैं।